निगोद के जीव

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

चौरासी लाख जीव योनियों में एकेन्द्रिय से लेकर पंचेन्द्रिय तक के जीव दिखाई देते हैं। जो सुख–दुख की अनुभूति करता है, जिसमें स्व और पर का ज्ञान होता है वे जीव राग–द्वेष से ग्रस्त होते हैं। कुछ जीव ऐसे हैं जिसमें हलन–चलन की क्रिया नहीं होती है, किन्तु उनमें भी आत्मा है। बैक्टिरिया, वायरस आदि जीव दिखाई नहीं देते किन्तु उनका अस्तित्व विज्ञान सम्मत है। ये इतने सूक्ष्म हैं कि इनको आंखों से नहीं देखा जा सकता। यंत्रों के माध्यम से इनके अस्तित्व का ज्ञान होता है। जीवों के जन्म के पीछे कर्म सिद्धान्त कार्य करता है। कर्म की गति बहुत ही विचित्र है। जो जैसा कर्म करता है उसको फल भोगने के लिए वैसी ही योनि प्राप्त होती है। इसलिए कर्म को विचारपूर्वक करना चाहिए। पूर्व जन्म में हमने जो कार्य किये हैं किन्तु उसका फल नहीं प्राप्त हुआ है। इस योनि में अवश्य ही उनका फल प्राप्त होगा। कर्म परिणाम को भुगते बिना मुक्ति नहीं मिल सकती। भुगते उसकी भूल है। जब चौरासी लाख जीव योनियों से जब त्राण मिल जाता है तो मोक्ष प्राप्त होता है। कायी इत्यादि जीव निगोद के जीव हैं। चेतना इनमें अविकसित रूप में रहती है। असंख्य–असंख्य निगोद के जीव हैं।

व्यवहार राशि में आने के बाद एकेन्द्रिय से लेकर पंचेन्द्रिय जीवों में आते–जाते रहते हैं। मूली, गाजर, आलू, जमीकन्द आदि में असंख्य जीव होते हैं। ये सभी जीव व्यवहार राशि के जीव हैं। इसीलिए जैन संत इनका उपयोग नहीं करते। इनमें असंख्य जीव रहते हैं। यदि हम इनका सेवन नहीं करते तो हम इन्हें अभयदान दे देते हैं। निगोद के जीव एक साथ ही उत्पन्न होते हैं। रेलगाड़ी इत्यादि में यात्रा करते समय यदि दुर्घटना होती है तो अनेक मनुष्य एक साथ ही मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं। ये सभी एक साथ ही जन्म लेते हैं। इसलिए कन्द, मूल, फल इत्यादि जमीन के अन्दर पैदा होने वाले वस्तुओं में इनका अवतरण होता है। जो पूर्ण अहिंसक होते हैं वे कन्द, मूल का सेवन नहीं।

जीव और अजीव के रूप में दो विभाग किये गये हैं। जीव चेतनायुक्त होता है और अजीव बिना चेतना के होता है। चेतना व्यक्त और अव्यक्त रूप में प्राणियों में रहती है। व्यक्त चेतना वाले जीव हलन–चलन की क्रिया करते हैं और अव्यक्त चेतना वाले जीव जड़वत् प्रतीत होते हैं। निगोद के जीव इसी श्रेणी के जीव हैं। षड्जीवनिकाय के अन्तर्गत पृथ्वीकायिक, अप्कायिक, तेजस्कायिक, वायुकायिक, वनस्पतिकायिक और त्रसकायिक जीवों की गणना होती है। जैन दर्शन में पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, वनस्पति को जीव माना गया है। ये सभी मिलकर पर्यावरण की रचना करते हैं तथा संतुलन बनाये रखने के लिए एक–दूसरे को प्रभावित करते हैं। किसी एक तत्त्व के असंतुलन से समूचा पर्यावरण प्रभावित होता है। अतः भगवान महावीर ने कहा विवेकी मनुष्य, पृथ्वी, जल आदि की हिंसा के परिणाम को जानकर न स्वयं इनकी हिंसा करें, न दूसरों से इनकी हिंसा करवाएँ और न ही हिंसा करने वालों का अनुमोदन करें। पृथ्वी, जल आदि की हिंसा करने वाला केवल इनकी ही हिंसा नहीं करता अपितु इनके आश्रित अनेक त्रस जीवों की भी हिंसा करता है। इन षड्जीवनिकायों की हिंसा नहीं करने का जैन दर्शन के निर्देश है।

पृथ्वी ही जिनका शरीर है ऐसे जीवों को पृथ्वीकायिक जीव कहा जाता है। वह अनेक जीव और पृथक् सत्वों वाली है। जल में रहने वाले जीव, जैसे मछली एवं अन्य प्राणी उस प्रदूषण से प्रभावित होते हैं। उन्हीं जंतुओं का प्रयोग जब मनुष्य खाने के लिए करता है तो वह विषाक्त भोजन अनेक बीमारियों का कारण बनता है। अग्निकाय का असंयम करने से ऊर्जा के स्रोत कम हो रहे हैं। इससे उद्योग, चिकित्सा आदि सभी क्रियाकलाप प्रभावित हो रहे हैं। वायु–प्रदूषण में भी अग्निकाय का असंयम ही अधिक निमित्त बन रहा है। प्रकृति की दृष्टि में एक पौधे का जीवन भी उतना ही मूल्यवान है, जितना एक मनुष्य का है। पेड़–पौधे पर्यावरण को प्रदूषण से मुक्त करने में जितने सहायक हैं, उतने मनुष्य नहीं हैं, वे तो पर्यावरण को प्रदूषित करते हैं।

मुनि के लिए तो हरित–वनस्पति को काटने एवं तोड़ने की बात तो दूर उसे स्पर्श करने का भी निषेध है। जिन जीवों में हलन–चलन एवं गमन की क्रिया होती है उन्हें त्रस जीव कहते

है। जो संत्रस्त होते है, उद्विग्न होते है, संकुचित होते है, डरते है तथा त्रास आदि अवस्थाओं में जो इधर–उधर पलायन करते है यह भी त्रस जीवों का लक्षण है। ये तीन प्रकार के है– 1. सम्मूर्च्छनज, 2. गर्भज, 3. औपपातिक। मानव अपने सुख–सुविधा के लिये त्रसकायिक जीवों की हिंसा करता है। त्रयकायिक जीव अंध, बधिर, मूक, पंगु और अवयवहीन मनुष्य की भांति अव्यक्त चेतना वाले होते हैं। शस्त्र से छेदन–भेदन करने पर जैसे जन्मना इन्द्रिय विकल मनुष्य को कष्टानुभूति होती है वैसे ही त्रसकायिक जीवों को भी होती है। कीट, पतंग, कुंथु, पिपीलिका, दो इन्द्रियवाले जीव, सब तीन इन्द्रियवाले जीव, सब चार इन्द्रियवाले जीव, सब पांच इन्द्रियवाले जीव, सब तिर्यक्योनिक जीव, सब नैरयिक जीव, सब मनुष्य, सब देव और सब प्राणी सुख के इच्छुक है। ये सब त्रसकायिक कहलाते है। आगमों में इनकी हिंसा का निषेध है।